

१. इतिहास किसे कहते हैं ?

- १.१ इतिहास : भूतकाल की घटनाओं का ज्ञान कराने वाला विज्ञान
- १.२ इतिहास की वैज्ञानिक पद्धति
- १.३ इतिहास और हम
- १.४ भूतकाल और भविष्यकाल

१.१ इतिहास : भूतकाल की घटनाओं का ज्ञान कराने वाला विज्ञान ।

पिछले वर्ष हमने चौथी कक्षा में छत्रपति शिवाजी महाराज के चरित्र और उनके द्वारा किए गए स्वराज्य स्थापना के कार्य का अध्ययन किया । शिवाजी महाराज के जन्म से पूर्व के समय का अर्थ आज से चार सौ वर्ष के पूर्व का समय होता है । इसी को हम चार सौ वर्ष 'प्राचीन' अथवा चार सौ वर्ष पूर्व का 'बीता हुआ' समय भी कह सकते हैं ।

हम अपने कार्य व्यापार की सुविधा की दृष्टि से समय का विविध पद्धति से विभाजन करते हैं । जब हम 'अभी', 'कुछ समय पहले',

'थोड़े समय के बाद'; अथवा 'आज', 'कल', 'परसों' इसी तरह 'इस वर्ष' 'अगले वर्ष' जैसे शब्दों का प्रयोग करते हैं; तब जाने-अनजाने हम अपने मन में समय की गणना करते रहते हैं । इन शब्दों में 'अब', 'आज', 'इस वर्ष' आदि शब्दों द्वारा वर्तमानकाल का बोध होता है । 'कुछ समय पूर्व', 'कल', 'पिछले वर्ष' ये शब्द भूतकाल को दर्शाते हैं । 'थोड़े समय के बाद', 'कल', 'अगले वर्ष' आदि शब्दों द्वारा भविष्यकाल का बोध होता है । बीता हुआ समय भूतकाल कहलाता है । अभी जो समय चल रहा है; उसे वर्तमानकाल कहते हैं और भविष्यकाल को अभी आना है ।

भूतकाल में कई घटनाएँ घटित हो चुकी होती हैं । जैसे : यदि आज हमारी आयु दस वर्ष की है तो इसका अर्थ यह होता है कि हमारे जन्म की घटना भूतकाल में दस वर्ष पूर्व घटित हुई है । इसी भाँति दस वर्ष के बाद अर्थात् भविष्य में हमारी आयु बीस वर्ष की होगी । हमारे जन्म



भूतकाल
जन्म
दस वर्ष पूर्व



वर्तमानकाल
हमारी आयु दस वर्ष है ।
आज



भविष्यकाल
हमारी आयु बीस वर्ष की होगी ।
दस वर्ष के बाद

के दिन से अब तक का अर्थात् बीता हुआ समय हमारा अर्थात् एक व्यक्ति के जीवन का भूतकाल कहलाता है ।

भूतकाल में घटित घटनाओं का जिस विज्ञान द्वारा हम बोध करते हैं; उसे 'इतिहास' कहते हैं ।

१.२ इतिहास की वैज्ञानिक पद्धति

तीसरी और चौथी कक्षा के परिसर अध्ययन विषय की पाठ्यपुस्तकों द्वारा हमारा विभिन्न विज्ञान शाखाओं से परिचय हुआ है । इन विज्ञान शाखाओं की विशेषता यह है कि किसी भी प्रमाण को प्रत्यक्ष प्रयोग के आधार पर बार-बार जाँचा जा सकता है । प्रत्येक प्रमाण का अलग-अलग निकषों पर परीक्षण करके वह विश्वसनीय है अथवा नहीं; यह निर्धारित करने की पद्धति को वैज्ञानिक पद्धति कहते हैं ।

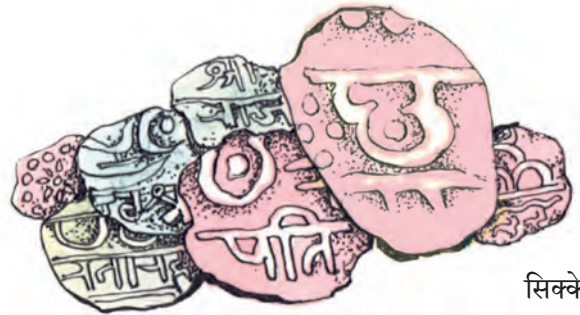
यद्यपि हमें हमारे जन्म के बाद से घटित कई बातें मालूम नहीं होती हैं; फिर भी दादा जी - दादी जी, माता जी-पिता जी आदि हमारे रिश्तेदार हमारे बचपन की रोचक बातें बताते रहते हैं ।

ये सारी बातें उनकी यादों में बसी रहती हैं । एक ही बात की याद अलग-अलग लोग बताते रहते हैं । परिणामस्वरूप उनके बताने में थोड़ा-बहुत अंतर पाया जाता है । ऐसे समय हमारे सामने यह समस्या उत्पन्न होती है कि इनमें से कौन-सी बात एकदम सही है । तब यह निश्चित करने के लिए कि कौन-सी बात एकदम सही है ? बताई गई बातों की सूक्ष्मता से जाँच करनी पड़ती है ।

भूतकाल की घटनाओं को जैसा का वैसा फिर से घटित करवाने का प्रयोग करना संभव नहीं होता है । अतः इतिहास को प्रस्तुत करने की पद्धति अन्य विज्ञान शाखाओं से भिन्न है । ऐसा होने पर भी इतिहास के प्रमाण को खोजने, जाँचने और तथ्यों के साथ उसका मिलान करने हेतु वैज्ञानिक पद्धति का ही अवलंब किया जाता है । इसके लिए आवश्यकतानुसार अन्य विज्ञान शाखाओं की सहायता ली जाती है । इसलिए इन सभी बातों पर विचार करते हुए कहा जाता है कि इतिहास एक विज्ञान है । इतिहास केवल कल्पना के आधार पर लिखा नहीं जाता ।



बरतन



सिकके



ताम्रपट



ग्रंथ और पांडुलिपियाँ

इतिहास के साधन

प्राचीन वस्तुएँ, भवन, शिल्प, बरतन, सिक्के, उकेरे हुए लेख, ताम्रपट, ग्रंथ, पांडुलिपियाँ, लोगों की स्मृति में बसी कथाएँ-कहानियाँ, लोकगीत आदि को 'इतिहास के साधन' कहते हैं। इन साधनों के भौतिक, लिखित और मौखिक ये तीन प्रकार बनते हैं। वास्तव में भूतकाल में क्या और कैसे घटित हुआ; यह खोजने के लिए इन साधनों द्वारा प्राप्त होने वाले प्रमाणों की सत्यता-असत्यता की कड़ाई से जाँच की जाती है। जाँच में सत्य सिद्ध हुए प्रमाणों को कालक्रम के अनुसार मिलाकर इतिहास लिखा जाता है। यही वैज्ञानिक पद्धति है।

१.३ इतिहास और हम

विज्ञान का अध्ययन करने से हमें अनेक प्रश्नों के उत्तर प्राप्त होते हैं। जैसे : पर्यावरण विज्ञान। पर्यावरण विज्ञान में पर्यावरण की हानि, प्रदूषण जैसी समस्याओं और उनपर किए जाने वाले उपायों का अध्ययन किया जाता है। वैसे ही प्रत्येक विज्ञान अपने-अपने विषय का अध्ययन करता है। इतिहास भूतकाल की घटनाओं का अध्ययन करता है।

व्यक्ति के व्यक्तिगत और सामूहिक कार्यों के परिणामस्वरूप मानवीय समाज की उन्नति हेतु या तो पोषक वातावरण का अथवा हानिकर वातावरण का निर्माण होता है। उसका प्रभाव हमारे प्रतिदिन के जीवन पर पड़ता रहता है। जैसे-जब किसी गाँव के लोग एकजुट होकर और एक-दूसरे के सहयोग से अपने उत्तरदायित्व पूर्ण करते हैं तब गाँव की उन्नति होती है; परंतु गाँव के लोगों में किसी कारण से एकजुटता न हो तो गाँव की उन्नति में बाधाएँ उत्पन्न होती हैं।

भूतकाल के मानवीय समाज के आचार-विचार और कार्यों के परिणामों की खोज करते

हुए इतिहास अनेक प्रश्नों के उत्तर ढूँढ़ता है। इतिहास का अध्ययन करने से मानवीय समाज की उन्नति के लिए क्या अच्छा; क्या बुरा; इसका अध्ययन करना संभव होता है। इतिहास के अध्ययन द्वारा यह भी ध्यान में आता है कि वर्तमान समय में हमारा आचरण कैसा होना चाहिए जिससे हम अपने भविष्यकाल का निर्माण अच्छे ढंग से कर सकेंगे।

भूतकाल के महान लोगों के चरित्र से स्फूर्ति और प्रेरणा प्रदान करने का कार्य भी इतिहास करता है। इतिहास के माध्यम से हम अपनी एवं अन्य संस्कृतियों के बीच हुए आदान-प्रदान और मानवीय संस्कृति के विकास की यात्रा से अवगत होते हैं। इसी भाँति मानव की जीवन पद्धति में किस प्रकार परिवर्तन होते रहे; यह भी ध्यान में आता है।

प्रत्येक गाँव, जिला, राज्य और देश का स्वतंत्र इतिहास होता है। इसी भाँति पृथ्वी, पर्वत, जलाशय, प्राणिजगत, मानव इन सभी का अपना स्वतंत्र इतिहास है।

प्रत्येक विज्ञान शाखा का भी अपना इतिहास होता है। उसके आधार पर हमें मानवीय संस्कृति में महत्त्वपूर्व परिवर्तन लाने वाले अनेक वैज्ञानिक आविष्कारों और उनके आविष्कारकों की जानकारी प्राप्त होती है।

१.४ भूतकाल और भविष्यकाल

विभिन्न घटनाओं की अखंडित शृंखला द्वारा भूतकाल, वर्तमानकाल और भविष्यकाल एक-दूसरे से जुड़े हुए होते हैं। जैसे : स्वतंत्रता प्राप्त करने हेतु भारतीयों ने अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष किया; यह एक ऐतिहासिक घटना है। इसी के फलस्वरूप १५ अगस्त १९४७ को

भारत देश स्वतंत्र हुआ । अतः ऐसा कह सकते हैं कि स्वतंत्रता प्राप्ति की घटना स्वतंत्रता संघर्ष की कृति का परिणाम है ।

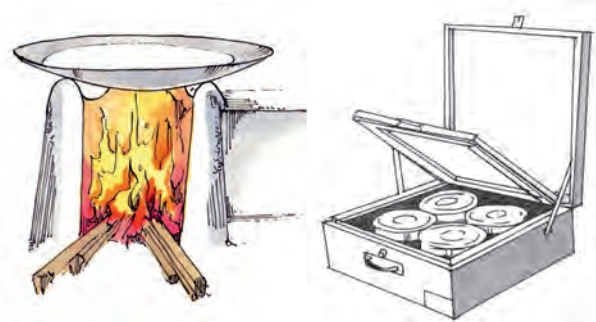
हमारे आस-पास घटित होने वाली अनेक घटनाएँ भी ऐसे ही पूर्व समय में हमारे द्वारा की गई गतिविधियों से जुड़ी हुई होती हैं । अतः हमें यह भी बोध होता है कि पूर्व समय में की गई कृतियों पर भविष्यकाल निर्भर रहता है । इतिहास के अध्ययन द्वारा हम यह सीखते रहते हैं । जैसे-प्राचीन काल में मनुष्य ने आस-पास के परिसर में उपलब्ध सामग्री से औजार बनाने की कला को आत्मसात किया; अग्नि का उपयोग कैसे करना चाहिए; यह सीखा । आगे चलकर



भूतकाल में हुए आविष्कार और तकनीकी विज्ञान

मनुष्य ने पहिये का आविष्कार किया ।

मनुष्य की आने वाली पीढ़ियों ने विकसित होती इन बातों में और वृद्धि की । मनुष्य की शारीरिक और बौद्धिक उन्नति के साथ-साथ तकनीकी विज्ञान का भी विकास होता गया । यह प्रक्रिया अभी भी अखंडित रूप में चल ही रही है । भूतकाल में हुए आविष्कारों के आधार पर ही भविष्य में नए आविष्कार करना संभव होता है ।



वर्तमानकाल में हुए आविष्कार और तकनीकी विज्ञान

स्वाध्याय

१. रिक्त स्थान में उचित शब्द लिखो :

- (अ) भूतकाल में घटित घटनाओं का जिस विज्ञान द्वारा हम बोध करते हैं; उसे ----- कहते हैं ।
- (आ) इतिहास केवल ----- के आधार पर लिखा नहीं जाता ।

२. एक वाक्य में उत्तर लिखो :

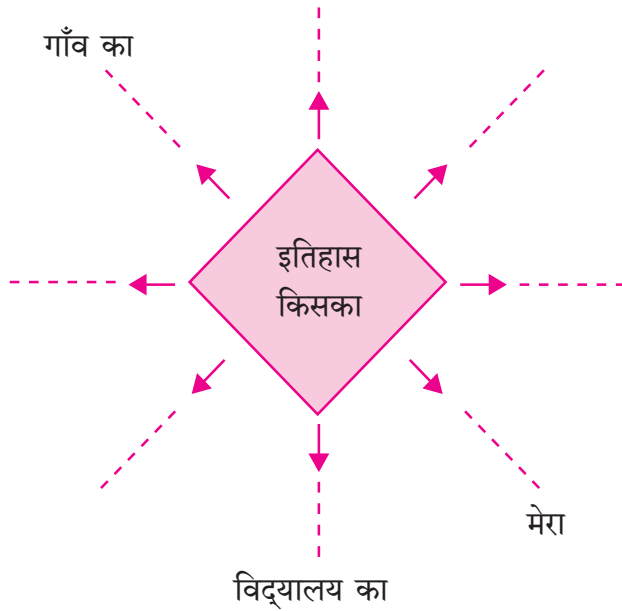
- (अ) वैज्ञानिक पद्धति किसे कहते हैं ?

- (आ) स्वतंत्रता प्राप्ति की घटना किस कृति का परिणाम है ?
- (इ) इतिहास का अध्ययन करने से क्या संभव हो जाता है ?

३. निम्न प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखो :

- (अ) इतिहास यह विज्ञान है; ऐसा क्यों कहा जाता है ?
- (आ) गाँव की उन्नति में बाधाएँ किस प्रकार उत्पन्न होती हैं ?

४. संकल्पनाचित्र बनाओ :



भौतिक	लिखित	मौखिक

उपक्रम

- (अ) अपने गाँव/परिसर के ऐतिहासिक भवनों, इमारतों और प्राचीन धार्मिक स्थलों की जानकारी और चित्रों का संकलन करो ।
- (आ) अपने विद्यालय के इतिहास को जानने के लिए तुम किन साधनों का उपयोग करोगे; इसकी सूची बनाओ और लिखो कि उन साधनों के आधार पर तुम्हें कौन-सी जानकारी मिल सकेगी ।
- जैसे - विद्यालय के शिलान्यास का पत्थर, विद्यालय की स्थापना, उद्घाटक आदि ।



५. निम्न सारिणी में इतिहास के साधनों का वर्गीकरण करो :

इतिहास के साधन - सिक्के, पत्राचार, किले, गढ़, चक्की के गीत, बरतन, ताम्रपट, रजवाड़े, शिलालेख, लोकगीत, स्तंभ, चरित्रग्रंथ, गुफाएँ, लोककथाएँ ।

क्या तुम यह जानते हो ?

पुरातत्त्व

विभिन्न मानव समाजों द्वारा भूतकाल में निर्मित अनेक वस्तुओं और भवनों/इमारतों के अवशेष अलग-अलग स्थानों पर देखने को मिलते हैं । उनमें से सभी जमीन पर होते हैं; ऐसा नहीं है । कई वर्षों से लगातार आती बाढ़ द्वारा वहन कर लाई गई काँप की मिट्टी की अथवा पवन द्वारा लाई गई मिट्टी की परतें जमकर उनके नीचे कुछ अवशेष दब जाते हैं । मानव द्वारा निर्मित वस्तुओं, भवनों/इमारतों; इसी तरह मानव एवं प्राणियों के कंकालों के अवशेष भी ऐसे ही दबे हुए होते हैं । ऐसे अवशेषों को 'पुरावशेष' कहते हैं । 'पुरा' का अर्थ पुराना अथवा प्राचीन होता है ।

भूतकाल की वस्तुओं और भवनों/इमारतों तथा उनके अवशेषों के आधार पर घटित घटनाओं को जिस वैज्ञानिक पद्धति से प्रस्तुत किया जाता है, उस विज्ञान को 'पुरातत्त्व विज्ञान' कहते हैं । प्राचीन अवशेष खोजने और उनका अध्ययन करने का कार्य पुरातत्त्व विशेषज्ञ करते हैं । भूमि के नीचे दबे हुए अवशेषों को प्रकाश में लाने हेतु भूमि की एक-एक परत की अत्यंत वैज्ञानिक पद्धति से जाँच करते हुए बहुत ही सावधानी से खनन किया जाता है । इस प्रकार खनन करने की प्रक्रिया को 'पुरातत्त्वीय उत्खनन' अथवा 'खुदाई' कहते हैं । जहाँ पुरावशेष पाए जा सकते हैं; ऐसे स्थानों की पहले खोज की जाती है । उनका व्यवस्थित अंकन किया जाता है । इसके पश्चात जिस स्थान पर उत्खनन करना है; उसका नियोजन किया जाता है । उत्खनन में पाए गए अवशेषों का अध्ययन करते समय पुरातत्त्व विशेषज्ञ कई प्रश्नों के उत्तर खोजने का प्रयास करते हैं । जैसे :

१. पाए गए अवशेष किस कालखंड के हैं ?
२. वे अवशेष किस सभ्यता/संस्कृति के हैं ?
३. उस सभ्यता/संस्कृति के लोगों का दैनिक जीवन का स्वरूप कैसा था ?
४. अन्य सभ्यता/संस्कृति के लोगों के साथ उन लोगों के संबंध किस स्वरूप के थे ?
५. अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने हेतु वे लोग अपने परिसर के प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग किस प्रकार कर लेते थे ?

